## धम विभाग धावेश

दिनांक 26 नवम्बर, 1984

सं. श्रो.वि./एफ.डी./172-84/42151.-- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं के लखानी इन्डस्ट्रीज, 17/3, म्थुरा. रोड, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री जगरीण साहु तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखिए फामले में कोई श्रीखोणिक विवाद है;

भीर बंकि हरियाणा के राज्यसाल विवाद की त्यायनिर्णय हेत् निर्देश्ट करना वांछनीय समझते हैं :

इसलिए, अब प्रोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 को उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिलाबों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इस के दारा सरकारी अधिसूचना यं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रधिसूचना सं. 11495-जी-अम-88-अम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के प्रयोग गठित अब न्यायालय, फरीदाबाद की विवाद गस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निद्धि करते हैं जो कि उक्त प्रवन्त की तथा अमिक के बीच या तो विवाद गस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अधवा सम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री जगदीश साहु की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?
सं भ्रो.वि/एफ.डी.-171-84/42158.--चृंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. इन्डी वूलन एन्ड सिल्क मिल्ज्
प्राठ लिंठ, 14/4, मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री श्रीनारायण झा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले म

ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, प्रब घौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गित्यों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्येपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं 11495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उवत ग्रिधिनियम की धारा 7 के ध्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :-

क्या श्री श्रीनारायण क्षा की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं. ग्री.वि./एफ.डी./175-84/42165.—चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. दुजीदवाला उद्योग प्रा. लि., 14/1 मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री शिवनाथ सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रंब ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधित्यम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 हारा उक्त ग्रिधित्यम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायितर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मानला है या विवाद से मुसंगत अथवा संबंधित ग्रामला है:—

क्या श्री शिवनाथ सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ? सं. श्री.वि/ए.फ.डी/146-83/42172.—चं कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. मोहिन्द्रा विक्रम इन्जीनियर्स श्रा. लि, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री गफार तथा उसके प्रबुन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रोद्योगिक विवाद हैं;

ग्रौर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब् ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिश्वनियम, 1947 की धारा 10की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला त्यायनिर्णय के लिए निर्दिटंट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुनंगत ग्रथना संबंधित मामला है:—

क्या श्री गफार की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हंकदार है ? वी० पी० सहगल,

संबुक्त सनिव, हरियाणा सरकार, सम विभाग ।